॥ श्री ॥

न्यायावतार

NYAAYAAVATAARA

आ. सिद्धसेन · ५वीं शती · अभिलेख २६/९०

आ. सिद्धसेन

संक्षिप्त परिचय

आचार्य सिद्धसेन कृत — बत्तीस श्लोकों में प्रमाण-लक्षण का अवतरण; जैन न्याय के प्राचीनतम प्रवेश-ग्रन्थों में परिगणित।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

न्यायावतार — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक २६ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. सिद्धसेन; रचना-काल ५वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ९६) के अनुसार इनका समय ५६८ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "दिगम्बराचार्य सम्मइसुत्तं ग्रंथ के कर्ता" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में तत्त्वार्थवृत्ति, सर्वार्थसिद्धि, समाधितन्त्र, इष्टोपदेश, जैनेन्द्रव्याकरण, सिद्धिविनिश्चय परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

तत्त्वार्थवृत्ति · सर्वार्थसिद्धि · समाधितन्त्र · इष्टोपदेश · जैनेन्द्रव्याकरण · सिद्धिविनिश्चय

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति २६ — मूल छायाचित्र

← सिद्धिविनिश्चय

लघीयस्त्रय →